जिज्ञासुता

उर्दू लेखक : मौलाना तक़ीयुल हैदरी साहब, प्रिन्सिपल वसीक़ा अरबी कॉलेज फ़ैज़ाबाद
अनुवादक : सैय्यद जाफ़र असर नक़वी, जायसी

उसका नाम 'केली ब्राउन' था। वह अमेरिका का निवासी था। उसे भारत आए हुए लगभग एक मास हो गया था। इस बीच वह भारत के अधिकांश ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कर चुका था। बाल्यवस्था से ही उसे देशाटन की अभिरूचि रही है और यही अभिरूचि उसे अमेरिका जैसे दूर देश से भारत ले आई थी और आजकल उसका निवास कलकत्ता जैसे महानगर में था वैसे तो उसने भारत के वातावरण को भली भांति देखा और समझा था, परन्तु जब से कलकत्ता पहुंचा था उसने एक विचित्र दृश्य देखा।

लोग सड़कों पर ढोल बजाते, अंग्रेज़ी बाजों के समूह के साथ कुछ तलवारें कुछ लाठियां लड़ते, मदिरा के नशे में मस्त, अपने मुख से भांति भांति के स्वर उच्चारित करते नूतन वस्त्र पहिने नेत्रों में सुरमा लगाए, फूलों से लदे हुए मिलते––और कुछ व्यक्ति बड़े बड़े चिन्हों, पुष्पों से सुसज्जित ताबूत और घोड़ा सजाये कागज की बड़ी बड़ी मीनारें जैसी वस्तु लिए, नंगे सिर नंगे पैर जलती हुयी सड़क पर काले वस्त्र पहने हुए दृष्टि गोचर हुए। उनमें से अधिकांश व्यक्तियों के नेत्रों से अश्रु धाराएं भी प्रवाहित देखीं। अधिकांश व्यक्ति तेज़ बलड़ या छूरियों से अपना वक्षस्तल अथवा पीठ भी घायल कर लेते जिसके परिणाम स्वरूप उनके शरीर से अधिक मात्रा में रक्त निकल जाता परन्तु इसके पश्चात भी वे अपने उद्देश्य की पूर्ति में शान्त ह्रदय के साथ लवलीन रहते।

केली को जब यह दृश्य निरन्तर कई दिन तक दिखायी दिया तो उसने एक दिन एक बंगाली बाबू से अत्यन्त भाव पूर्ण अंग्रेज़ी में प्रथम व्यक्तियों के समूह के विषय में पूछा ''ये कौन लोग हैं और क्यों इस प्रकार उछल कूद कर प्रसन्नता का प्रदर्शन कर रहे हैं?'' बंगाली बाबू को इस विषय में अधिक ज्ञान न था इस कारण उन्होंने अपर्याप्त उत्तर दिया ये लोग मुसलमान हैं आज कल इन लोगों का त्योहार चल रहा है जिसको मोहर्रम कहते हैं''––सह सुन कर केली चुप होगया––

दूसरे दिन केली ने दूसरे व्यक्तियों के समूह को देखा जो अपनी छाती कूटता एक लम्बी चौड़ी सड़क से जा रहा था। केली की जिज्ञासा जागृत हुई और उसने निकट खड़े हुए एक चीनी से पूछा, ''यह लोग कौन हैं और क्यों इस प्रकार अपने को हताहत करते हैं?''

चीनीः– ''यह लोग मुसलमान हैं इनका त्योहार है जिसको मोहर्रम कहते हैं, यह लोग कुछ दिनों तक प्रति वर्ष यही किया करते हैं।''

केली ने जब यह सुना तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक समूह कल था जो दूसरे

रंग में था और आज यह दूसरे रंग में हैं फिर भी उस बंगाली ने उन्हें भी मुसलमान बताया था और यह इनको भी मुसलमान कहता है। यह किस प्रकार सम्भव है कि एक धर्म के लोग एक ही त्योहार में कभी अपने को शोकातुर बना लें और कभी इस प्रकार प्रसन्नता का प्रदर्शन करें। कुछ क्षण तक वह यही सब विचार करता रहा फिर उसने उसी चीनी से कहा——

केलीः——''परन्तु कल तो यह बहुत प्रसन्न थे इन के साथ बैंड बाजे और ढोल ताशे थे कल तो यह इस प्रकार अपने शरीर को काट नहीं रहे थे कल यह प्रसन्न थे आज रो रहे हैं क्या बात है?''

चीनीः——''नहीं ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें आपने कल देखा था।''

केलीः——''मैंने एक सज्ज्न से पूछा था वे उन लोगों को भी मुसलमान ही बता रहे थे।''

चीनीः—''हां, वे लोग भी मूसलमान हैं और ये लोग भी।''

केलीः—''तो फिर कल वैसे और आज इस प्रकार क्यों?''

चीनीः—मुसलमानों मे दो पार्टी हैं, यह दूसरी पार्टी थी।''

अभी इतनी ही बात हुई थी कि जुलूस आगे बढ़ गया। चीनी को भी कहीं जाना था उसने भी आगे बढ़ कर जाना चाहा तो केली ने कहा, ''आप ने एक विचित्र बात बताई है, क्या इसको सविस्तार नहीं बता सकते?''

चीनीः—''सम्पूर्ण विवरण तो मैं स्वय भी नहीं दे सकता, हां जितना ज्ञान है अवश्य बताउंगा।''

केलीः—''तो आइए किसी होटल में बैठ कर बातें करेंगे।''

ये लोग पास ही के एक होटल की ओर बढ़े। मार्ग में जितना समय लगा दोनों में से एक ने भी कोई बात नहीं की। कदाचित इसका कारण यह रहा हो कि इस बीच केली किसी विचार में खो गया था। जब यह दोनों होटल की एक केबिन में बैठ लिए तो चीनी ने वार्तालाप का प्रारम्भ किया—

चीनीः—''अब जब कि अधिक समय से हम लोग निकट हैं, यह आवश्यक है कि कुछ परिचय हो जाये।''

केलीः—''मूझे केली ब्राउन कहते हैं, मैं अमेरिका का निवासी हूं देशाटन की अभिरूचि में यहां आया हूं।''

चीनीः—''मुझे सिचियाँग कहते हैं, मैं हूँ तो चीनी परन्तु यहां एक भारतीय नागरिक हूं। और यहीं रहता हूं।

इस अपर्याप्त परिचय के पश्चात केली ब्राउन ने कुछ जलपान का आर्डर दिया और तुरन्त ही सिचियाँग से विवरण बताने को कहा।

सिचियाँगः— ''हां तो जैसा मैंने प्रथम आप से कहा था कि मुसलमानों में दो सम्प्रदाय हैं और वे दोनों ही मुसलमान कहलाते हैं। प्रन्तु रचनात्माक रूप से वे एक दूसरे से विभिन्न हैं एक मोहर्रम में प्रसन्नता का प्रदर्शन करता है और एक शोक प्रकट करता है।''

केलीः—''परन्तु इसका कारण क्या है जब कि दोनो का एक ही सुधारक है, क्या दोनों का प्रास्पेक्टस अर्थात कुरआन विभिन्न हैं?''

सिचियाँग :—''नहीं, मैने एक मुसलमान पन्डित से पूछा था, वह कहता था कि नहीं, हम दोनों का कुरआन एक ही है।''

केलीः—''तो फिर इस मतभेद की परिस्थिति का कोई कारण समझ में नहीं आता।''

सिचियाँग :—''मैं बताता हूं। यह मतभेद आज का नहीं वरन जैसा कि मुझे ज्ञात है यह मतभेद मोहम्मद साहब के जीवन ही से आरम्भ हुआ।, परन्तु उनका यह मतभेद उस समय शक्तिशाली हुआ, जब मोहम्मद साहब का देहान्त हो गया और एक कमेटी के द्वारा कुछ मुसलमानों ने उनका एक पदाधिकारी चुन लिया परन्तु थोड़े से मुसलमानों को यह बात अप्रिय लगी।''

केलीः— ''क्यों? ऐसा क्यों हुआ? जब जन मत द्वारा यह निर्वाचन हो गया तो उनमें फूट क्यों पड़ी?''

सिचियाँगः— ''वे कहते थे कि मोहम्मद साहब ने स्वयम् अपने जीवन में 'अली' को अपना पदाधिकारी घोषित कर दिया था जो उनके दामाद एंव चचेरे भाई भी थे और जिन्होंने मोहम्मद साहब के समय के समस्त युद्धों में प्रकट रूप से कार्य किया था।''

केलीः— ''अच्छा, फिर?

सिचियाँगः— तो बस वहां से ही इस्लाम की दो शाखांए हो गईं, एक ने उस निर्वाचित व्यक्ति को पदाधिकारी माना, दूसरे ने अली को, फिर यह क्रम चलते चलते अली से उनके छोटे पुत्र ''हुसैन'' तक पहुंचा और उधर का क्रम 'यजीद' तक पहुंचा परन्तु 'हुसैन' और 'यजीद' में परस्पर एक महायुद्ध हुआ।''

केलीः— ''क्यों? इस यद्ध का कारण क्या हुआ?''

सिचियाँगः— ''कहा जाता है और मेरा व्यक्तिगत अन्वेषण भी यही बताता है कि यजीद एक भोग विलास का प्रेमी व्यक्ति था। इस्लाम के वे सिद्धान्त जिन पर मुसलमानों को गर्व है वह उनको नष्ट कर देना चाहता था, परन्तु हुसैन इस्लाम धर्म के प्रचारक के नाती थे जिनके पिता, नाना तथा भाई सभी ने अपना सम्पूर्ण जीवन इस्लाम के विकास के सम्बन्ध में व्यतीत किया था और अनेको कष्ट उठाये थे इसी के कारण हुसैन इस्लाम का विनाश होते न देख सके।''

केलीः— ''यजीद इस्लाम धर्म के सिद्धान्त को कैसे नष्ट करना चाहता था?''

सिचियाँगः— ''यही कि वह स्वम् मदपान को उचित समझता था धर्म का वैभव उसके समक्ष तुच्छ था नृत्य एंव संगीत से उसको अधिक रूचि थी——और इसी प्रकार की अनेकों बातें।''

केलीः— ''तो एसे व्यक्ति के रिफार्मर होने का तात्पर्य क्या? उसको किसने मोहम्मद साहब का पदाधिकारी बनाया?''

सिचियाँगः— ''उसको उसके पिता 'मुआविया' ने अपना पदाधिकारी नियुक्त किया था क्यों कि 'यजीद' के पूर्व वही खलीफा था।''

केलीः—''यह मुआविया कौन था और कैसे खलीफा बना?''

सिचियाँगः—''रसूल का जो तीसरा पदाधिकारी घोषित किया गया था वह 'बनी उमय्या' का एक Candidate था, उसने एक स्थान का गवर्नर 'मुआविया' को बना दिया था जिस स्थान का नाम शाम (सीरिया) है। जब चौथा पदाधिकारी अली को बनाया गया तो उन्होंने यह प्रिय नहीं किया कि 'मुआविया' का गवर्नर रहे। परिणाम में दोनों में परस्पर युद्ध भी हुआ। परन्तु कुछ मुसलमान अली को ओर और कुछ मुआविया को मोहम्मद साहब का खलीफा मानते रहे परन्तु यह बात आश्चर्यजनक है कि आज के मुसलमान दोनों को मोहम्मद साहब का ख़लीफा मानते हैं और उनका आदर करते हैं परन्तु यह वही मुसलमान हैं जो मोहर्रम में प्रसन्नता का प्रदर्शन करते हैं परन्तु शोकातुर मुसलमान केवल अली को मानते हैं। तो जब 'मुआविया' अपनी आन्तिम अवस्था को पहुंचा तो उसने अपने कुपुत्र 'यजीद' को अपना ख़लीफा नियुक्त कर दिया।''

केलीः— ''अच्छा तो वह तीसरा पदाधिकारी कौन था।''

सीचियांगः— ''हजरत उस्मान 'उमवी'।''

केलीः— ''परन्तु यह हजरत उस्मान कैसे पदाधिकारी बने।''

सीचियांगः—''इनको दूसरे खलीफा हजरत उमर ने अपना पदाधिकारी घोषित किया था।''

केलीः—''अर्थात?''

सीचियांगः— ''जब दूसरे खलीफा की अन्तिम घड़ी आयी तो उन्होंने एक कमेटी बनायी और उनको यह अधिकार दिया कि उन में से किसी एक को अपना रिफारमर चुन लें, अतः उन्होंने 'उस्मान' को चुन लिया।''

केलीः— ''और दूसरे को सम्भवतः पहला घोषित कर गया होगा?''

सीचियांगः— ''हां! ऐसा ही हुआ था।''

केली :—''अच्छा तो यह क्रम इस प्रकार है, उधर से यजीद आया, इधर से हुसैन गये दोनों में युद्ध छिड़ा, फिर क्या हुआ?''

सीचियांगः—''हुसैन का बध कर ड़ाला इस कारण एक गिरोह रोता है।''

केलीः—''और यजीद विजयी हुआ इस कारण दूसरा गिरोह हंसता है?''

सीचियांगः—''हां प्रत्यक्ष रूप से तो यही बात समझ में आती है परन्तु वे इस बात से इनकार करते हैं अपितु अपनी प्रसन्नता के अन्य कारण बताते हैं।''

केलीः— ''वे क्या कारण हैं?''

सीचियांगः— ''वे कहते हैं कि उस दिन खुदा के भेजे हुए अनेकों पैगम्बरों ने आपत्ति से मुक्ति पायी है। उदाहरणार्थ यह कि 'आदम'(1) की क्षमा याचना स्वीकार की गयी। हजरत नूह की नौका 'जूदी' पत्थर पर आकर रूकी 'नमरूद'(2) के द्वारा जलाइ गयी अग्नि उस समय पुष्पों की वाटिका बन गयी जब इब्राहीम उसमें फेंके गये। इत्यादि इत्यादि।

केलीः—''यह लोग बहुत समय पहले गुजरे हैं और हुसैन बाद में। अतः इससे उसका क्या सम्बन्ध?''

सीचियांगः—''हां वे महापरूष इस्लाम के पैगम्बर से शताब्दियों पूर्व हुए हैं।''

केलीः—''तो मुसलमान अपने पैगम्बर के नाती का बध किये जाने पर नहीं रोता वरन् अन्य पैगम्बरों की मुक्ति पर प्रसन्न होता है, कितनी व्यंगपूर्ण बात है।

सीचियांगः— ''हां है तो बड़ी विचित्र बात। अच्छा मूझे आज्ञा दीजिए अब मैं चलूंगा।''

केलीः— ''अभी आप से बहुत कुछ पूछना था, अच्छा कोई समय और दीजिए, मुझको इससे अधिक रूचि हो गयी है।''

सीचियांगः— ''आप का निवास यहां किस स्थान पर है?''

केलीः— ''मैं ग्रांड होटल, कमरा नम्बर 26 में ठहरा हूं।''

सीचियांगः— ''अच्छा तो कल प्रातः एक बजे मैं मिलूंगा।''

फिर यह दोनों अन्तिम वाक्यों के पश्चात विदा हो गये।''

8 बज चुके थे प्रन्तु अब तक सीचियांग नहीं आया था और केली व्याकुलता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि सहसा वह दृष्टिगोचर हुआ। उसने शुभागमन कर उसका स्वागत किया और तुरन्त बैरे को बुला कर चाय मंगाई फिर प्राथमिक वार्तालाप के पश्चात उन दोनों में जो वार्तालाप हुई उसका आरम्भ इस प्रकार हैः—

केलीः—''हां तो यहां तक बात पहुंची थी कि वे मोहर्रम की दसवीं को अन्य पैगम्बरों के कल्याण का दिन समझते हैं।''

सीचियांगः—''हां''

केलीः—''परन्तु यदि वे ऐसा समझते हैं तो फिर यह लाठी एंव तलवार और लड़ना भिड़ना क्या?''

सीचियांगः—''वे इन्हीं बातों में हुसैन की स्मृति को भी सम्मिलित करते हैं।''

केलीः—''स्मरण करने का यह ढ़ंग विचित्र है—अच्छा तो वह अन्य पार्टी वाले जो रोते हैं तो ताबूत तथा घोड़ा इत्यादि लेकर क्यों चलते हैं?''

सीचियांगः—''देखिए, समय से याद आया आज ही का दिन वह दिन है जिस दिन हुसैन[अ०] का बध हुआ और आज एक बहुत बड़ा जलूस निकलेगा, जो रोने वालों का होगा——आइये यदि समय हो तो चलिए वहीं प्रत्येक वस्तु के विषय में

---

(1)इश्वर की ओर से इस संसार मे मनुष्यों के कल्याण के लिये अनेकों महापुरूष आये जिन्हें पैगम्बर कहते हैं। ये तीनों पैगम्बर उन्हीं महापुरूषों में से थे। इनमें प्रथम हजरत आदम थे और अन्तिम मोहम्मद साहब।

(2)एक पापी और हथ्यारा राजा जिसने ''इब्राहीम'' को इस कारण जला देना चाहा था कि उन्होंने उसकी प्रतिज्ञा भंग की थी और उस पर यह स्पष्ट किया था कि ईश्वर तुम नहीं वह है, जिसने तुम को भी जन्म दिया है। अनूवादक

आपको ठीक ठीक बता दूंगा।''

केलीः— ''हां,हां यह तो अत्यन्त हर्ष की बात है, मैं रात भर इन्हीं समस्त बातों के विषय में विचार करता रहा, क्या ही अच्छा होता कि मुझे इतिहास के अध्ययन का अवसर मिलता और मैं यह सब कुछ भली भांति जान सकता, मुझे इतिहास से कभी रूचि नहीं रही परन्तु यह सब सुनने के पश्चात मन करता है कि इतिहास का गहन अध्ययन करूँ।''

यह कहकर वह उठा और साथ हो लिया। उस समय लगभग 9 बजे होंगे। कलकत्ता का वह महान जुलूस एक चौड़ी सड़क से आगे बढ़ता हुआ मिला। लगभग ढ़ाई लाख व्यक्ति अपने हृदय में विभिन्न प्रकार के विचार लिए उसे देखने में व्यस्त थे और एक शोकातुर पार्टी के लोग नोहा पढ़ने, छाती पीटने और रोने धोने में व्यस्त थे केली और सिचियाँग भी एक उच्च स्थान पर खड़े हो गये। उसी समय केली की दृष्टि एक सुसज्जित घोड़े पर पड़ी और उसने पूछा——

केलीः—''यह क्या है एक घोड़े को लोग इस प्रकार क्यों सजाए हुए हैं?''

सिचियाँगः—''इसे यह लोग अपनी भाषा में 'ज़ुलजनाह' अथवा 'दुलदूल' कहते हैं। यह उस घोड़े की आकृति है जिस पर 'हुसैन' लड़ने के लिए युद्धस्थल में गये थे।''

केलीः—''इस पर बाण क्यों लगा रखे है?''

सिचियाँगः—''हुसैन पर वाणों की वर्षा की गयी थी अतः कुछ वाण घोड़े के भी लगे थे।''

केलीः—''इसका मस्तक क्यों लाल है?''

सिचियाँगः—''जब हुसैन[अ०] शहीद (अमर) हो गए तो उनके अमरत्व का समाचार घोड़े ने इस प्रकार दिया कि अपने मस्तक को हुसैन के रक्त से लाल किया और शिविर तक दौड़ता हुआ पहुंचा और इस प्रकार हुसैन[अ०] के बध का समाचार इनके शिविर तक पहुंचा।''

केलीः—''तो क्या हुसैन[अ०] के साथ और लोग जो लड़ रहे थे यह समाचार नहीं ला सकते थे?''

सिचियाँगः—''ओहो! एक बहुत बड़ी बात तो मैं आप को बताना भूल ही गया वह यह कि पुस्तकों से यह बात भली भांति स्पष्ट हो जाती है कि हुसैन की सेना का प्रत्येक व्यक्ति अकेले लड़ता था अन्त में हुसैन भी अकेले ही लड़ने गये थे।

केलीः— (आश्चर्य से) ''अरे! तो क्या यज़ीद की सेना का भी एक एक सैनिक अकेले लड़ने आता था ? यह ढ़ंग तो बड़ा विचित्र है।

सिचियाँगः—''नहीं। इधर के एक सैनिक के मुकाबले में उधर की समस्त सेना रहती थी।''

केलीः—''फिर तो इधर के प्रत्येक सैनिक का जाते ही बध कर डाला जाता रहा होगा ?''

सिचियाँगः—''नहीं! यही तो आश्चर्य की बात है कि इधर का प्रत्येक सैनिक जो भी रणक्षेत्र में जाता था सैकड़ो का बध करता था। आप सम्भवतः यह समझ रहे होंगे सेना में कोई लाख दो लाख आदमी थे परन्तु आप को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हुसैनी सेना में कुल बहत्तर व्यक्ति थे (जिसमें कुछ वृद्ध, कुछ बालक, कुछ स्त्रियां तथा एक दूध पीता बच्चा भी था——अनुवादक) इस बात पर सभी इतिहास वेत्ता सहमत हैं। यज़ीद की सेना का प्रथम आक्रमण वाणों की वर्षा के रूप में हुआ था, परिणाम स्वरूप हुसैन की सेना के अधिकांश व्यक्ति उसी समय हताहत हो गए जो शेष रहे थे वे बारी बारी लड़े।''

केलीः—''यह तो विश्व का विचित्र युद्ध हुआ कि मुट्ठी भर व्यक्ति टिड्डी दल सेना के मुकाबले पर तत्पर हो गये।''

सिचियाँगः— ''और यह सुन कर तो आप को भी आश्चर्य होगा कि हुसैन[अ०] की सेना का प्रत्येक व्यक्ति तीन दिन का भूका और प्यासा था। फिर भी उस सेना के प्रत्येक सैनिक ने यजीद की सेना के छक्के छुड़ा दिये वह देखिए—(संकेत करते हुए) सामने जो लोग कुछ व्यक्तियों को पानी पिला रहे हैं यह हुसैनी तृष्णा की ही स्मृति है।''

अभी यह वार्तालाप हो रही थी कि जुलूस

कुछ आगे बढ़ा और अब जो वस्तु उन लोगों के सम्मुख रूकी वह एक 'अलम' था जिसकी ओर केली ने संकेत करते हुए पूछा—''यह ध्वजा के सामने क्या है?''

सिचियाँगः—''यह हुसैन के सेनापति का चिन्ह (पताका) है, उसका नाम 'अब्बास' था वह हुसैन का छोटा भाई था और इसमें जो एक मश्क (चमड़े का बर्तन जिसमें जल भरा जाता है) लगी है वह वही है जिसे लेकर अब्बास 'फुरात' नदी के घाट तक गये थे यह वीर हुसैनी सेना का सबसे बलवान था जिसको प्रत्येक इतिहास वेत्ता ने बड़ा बलवान बताया है।''

केलीः—''तो क्या यह हुसैन[अ०] की सेना तक जल ले आया था?''

सिचियाँगः—''नहीं! यह उस घाट तक तो पहुंच गया था जिस पर लाखों का पहरा था। उसने मश्क भी पानी से भर ली थी परन्तु लौटते समय यज़ीदी सेना ने उसे घेर लिया अन्त में भीषण युद्ध हुआ उस बलवान की दाहिनी भुजा कट गयी। उसने बाएं हाथ से मश्क संभाली, जब वह हाथ भी कट गया तो अपने दान्तों से मश्क को संभाला। अन्त में एक बाण आकर मश्क पर पड़ा। पानी बहने लगा, जल के प्रवाहित होते ही उसकी शक्ति भी क्षीण हो गयी और हृदय खंडित होगया उसके शरीर पर अनेकों घाव पड़ चुके थे इस कारण वह घोड़े से गिर पड़ा और कुछ समय के पश्चात उसने दम तोड़ दिया।''

केलीः—''वे लोग बड़े निर्दयी थे, बड़े कायर कि सब मिलकर एक अकेले से युद्ध करते थे।''

फिर केली इस प्रकार समस्त वस्तुओं के विषय में पूछता रहा और सीचीयांग सविस्तार वर्णन करता रहा। अन्त में जब उसके सामने एक ताबूत आया तो उसने पूछा—''यह क्या?क्या इसमें कोई शव है?''

सीचियांगः—''नहीं। यह हुसैन के शव की आकृति है। इन लोगों का कथन है कि हम अपने इमाम की अर्थी उठाते हैं इस कारण कि करबला में उनकी अर्थी न उठ सकी, यह उसी की स्मृति है।''

केलीः—''अर्थात?''

सिचियाँगः—''जब हुसैन का बध कर ड़ाला गया तो अब उनकी सेना में कोई शेष न था, एक पुत्र था वह भी रोगी परन्तु वह भी बन्दी बना लिया गया था इस कारण हुसैन की अर्थी न उठ सकी थी अतः यह उसी की स्मृति है।''

केलीः—''वे लोग बड़े अत्याचारी थे और मुझे आश्चर्य होता है कि इसके अतिरिक्त भी वे मुसलमान कहलाते हैं। अपने पैगम्बर के नाती के साथ ऐसा दुर्व्यहार करने वाला कदापि मनुष्य कहे जाने का भागी नहीं हो सकता इस्लाम तो एक शान्ति प्रिय सम्प्रदाय है वह हमें भी प्रिय है। परन्तु जब उसमें इस प्रकार के भी व्यक्ति हों तो उसे विश्व के समस्त धर्म अपने से अलग कर देंगे।''

जुलूस अब आगे बढ़ गया था अतः इस कारण सिचियाँग ने केली से कहा—''अच्छा, अब तो मैं लगभग आपकी आवश्यक वस्तुओं के विषय में बता ही चुका हूं। और अधिक ज्ञान स्यम् भी नहीं है इस लिए अब मुझे आज्ञा दीजिए—यदि अवसर रहा तो फिर मिलूंगा।''

केलीः—''मैं तो कल अपने देश लौटकर जा रहा हूं , इस कारण यह भेंट अन्तिम ही समझो प्रिय मित्र! परन्तु तुम मुझे आजीवन याद रहोगे इस कारण कि तुमने विचित्र बात बताई है और वह ऐसी है जिसे संसार के प्रत्येक व्यक्ति को जानना चाहिए। मुझे इतिहास से कोई लगाव तो न था परन्तु मैं हुसैन जैसे महान व्यक्ति के इतिहास का अध्ययन अवश्य करूंगा जिस पर मानवता को गर्व है।''

फिर उन्होंने एक दूसरे का पता नोट किया और अन्तिम वाक्यों के पश्चात एक दूसरे से विदा हो गये——

दूसरे दिन केली हवाई जहाज पर बैठा ''हुसैन'' के विषय में सोच रहा था।

(बक़िया पेज नं0 25 पर...........)

(पेज नं0 16 का बक़िया...............)

इस घटना के पश्चात लगभग दस मास व्यतीत हो गये थे कि अकस्मात एक दिन सवेरे की डाक से सिचियाँग को एक विदेशी पत्र मिला, सिचियाँग ने लिफाफा खोला तो अंगेज़ी भाषा में एक अपर्याप्त पत्र मिला जो इस प्रकार था——

न्युयार्क, 26 नवम्बर 1962 ई०

प्रिय मित्र !

''आशा है तुम सकुशल होगे। तुम से विदा होकर मैं दूसरे दिन अपने देश के लिए प्रस्थान कर गया था। इस बीच पत्र न भेजने की क्षमा चाहता हूं। जबसे मैं यहां लौटकर आया हूं मेरा कार्य केवल इस्लामी इतिहास का अध्ययन करना है, और आज मैं यह बात कहने पर विवश हो गया कि——

''हुसैन''—एक महान आत्मा तथा उच्च चरित्र के वाहक थे जिन पर मानवता को गर्व रहेगा, साथ ही साथ वे निर्दोश और अमर हैं।

'यज़ीद':— पापी और अत्याचारी होने के साथ साथ एक ऐसा मानव शत्रु एंव हत्यारा था जो मानवता के माथे का कलंक है।

मैं तुम्हारे इस पथ प्रदर्शन का कृतज्ञ हूं।''

तुम्हारा केली ब्राउन

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 554 मुहर्रम 1388 हि0/अप्रैल 1968 ई0)

